प्रास्ताविक

शुरु से ही मेरी नाटकों के प्रति विशेष रुचि रही हैं । मैंने अनेक नाटकों में अभिनय किया हैं । छुटपन में गाँव में खेले जानेवाले भजनी मंडलियों में अभिनय का काम किया करता था । मैंने अब अपनी रुचि के अनुसार एम्. फिल के प्रबंध के लिए विशेष साहित्य विधा के रुप में 'नाटक' को चुना हैं । अश्क जी की सभी साहित्य विधाओं को गौर से देखने के बाद मुझे अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटकों ने आकर्षित किया । और विशेष करके सभी नाटकों में 'भँवर' से मुझे अध्ययन के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला । प्रतिभा जैसी अनेक लडकियाँ आज उच्च शिक्षा के कारण अपनी ही गर्त में फँसती हुई दिखाई दे रही है । शिक्षित स्त्रियों की ही आज तलाक की संख्या बढ़ रही है । अपना परिवार पढ़-लिखकर सुंदर और सदृढ बनाने के बजाए विषाक्त क्यों बना रही है । यह देखने के बाद मैंने 'भँवर' को लेकर प्रबंध प्रस्तुत करने का निर्णय लिया ।

अश्क जी ने खुब शिक्षित और सुंदर युवतियों पर व्यंग्य किया है । आज की नारी परिस्थिति के साथ समझौता नहीं कर रही है । लेखक का मत यह है, कि स्त्री का शिक्षित होना जरुरी है लेकिन वह इस हदतक, कि वह खुद का जीवन सुगम और सफल बनाये, लेकिन आज खूब शिक्षित नारी खुद को ही समझने में असफल हो रही है फिर दूसरों का जीवन क्या सुधारेंगी । आधुनिक नारी अपनी ही गर्त में फँसती जा रही है, जिसप्रकार दलदल में फँसा व्यक्ति बाहर आने के लिए पूरी ताकद से हाथ - पैंर मारता है लेकिन वह बाहर आने के बजाए उसी में ही गहराई तक डूबता चला जाता है । आज की नारी खुद को संयमित नहीं रख रही है , जिस प्रकार वह मकड़ी के जाल की तरह जीवन के जाल में फँसती जा रही है । शिक्षित युक्तियों में विशृँखलता, स्वच्छन्दीप्रवृत्ति और मनमौजी प्रवृत्ति के कारण वह मानसिक असंतुलन के भँवर में फँस रही है । पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण आज हमारा परिवार, समाज तथा राष्ट्र खतरे में है ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कुल - मिलाकर पाँच अध्याय है । प्रथम अध्याय में अश्क जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया हैं । जीवन संघर्ष में भी अश्क जी ने साहित्यकार को किसप्रकार अलग रखा है यह भी इसमें लिया गया है । कौशल्या अश्क अपने साहित्यकार का उत्सर्ग कर पति अश्क के लिए किसप्रकार प्रेरणा और पथप्रदर्शक बन गयी साथ ही उनके साहित्य सृजनमें कितना सहयोग दिया इसका भी विवरण व्यक्तित्व में दिया गया है । सभी विधाओं में अधिकार पूर्वक लेखनी चलानेवाले साहित्यकार अश्क के कृतियों का थोडे में परिचय कृतित्व में दिया गया है । अश्क के नाटकों की कथावस्तु, वस्तु - विन्यास और उद्देश्य का भी परिचय कृतित्व में दिया गया है ।

दूसरे अध्याय में 'हिंदी के मनोवैज्ञानिक नाटक के विकास की रुपरेखा' दी गई है । संस्कृत साहित्य में अनेक कृतियों में मनोविज्ञान के रुप मिलते है । संस्कृत साहित्य में मनोविज्ञान को अध्यात्मशास्त्र का ही एक अंग माना जाता था । इस परम्परा का विकास आगे चलकर भी अविरल रुप से दिखाई देता है । संस्कृत नाटकों का हिंदी नाटकोंपर प्रभाव दिखाई देता है । इस परम्परा को सदृढ बनाने के लिए पाश्चात्य विद्वज्जनोंका बहुत बड़ा योगदान मिला है । फ्राइड, युंग आदि मनोवैज्ञानिकों ने जो सिध्दांत निर्धारित किये, उनके आधारपर ही आज कृति का मुल्यमापन किया जाता है । मनस्तत्ववेताओं के सिध्दान्तों को सामने रखकर आज हिंदी में बहुत नाट्य कृतियों का निर्माण हो रहा है । मनोवैज्ञानिक नाट्य - परम्परा का आज विकसित और प्रौढ़ रुप देखने को मिलता है ।

तीसरे अध्याय में ' भँवर ' नाटक का शिल्प विधान प्रस्तुत किया गया है । ' भँवर ' साहित्यिक दृष्टि से एक श्रेष्ठ और सफल नाटक है । वह चरित्र प्रधान और नायिका प्रधान नाटक है । इसमें अश्क जी ने सभी नाटय तत्वों का सुंदरता से प्रयोग किया है । ' भँवर ' एक गंभीर नाटक होते हुऐ भी अश्क जी ने बड़ी सुरुचिपूर्ण ढंग से हास्य, व्यंग्य की छिंटे देकर उसे आल्हादायक बनाया है । नाटय - शिल्प की दृष्टि से अश्क ने इस नाटक

के माध्यम से नई शिल्पविधा का अन्वेषण किया है ।

चौथे अध्याय में ' भँवर ' नाटक की मनोवैज्ञानिकता स्पष्ट की है । प्रतिभा में कौन - कौनसी मनोवैज्ञानिक विशेषता है यह उसके चरित्र में दिखाया है । प्रतिभा का व्यक्तिमत्व किस वजह से भँवर बन गया है उसके पीछे कौनसी शक्ति है जो बरबस उसे जीवन की वास्तविकता से डरा रही है इसका भी विवरण इसमें है । साथ ही अन्य पात्रों में भी किसप्रकार मनोविज्ञान के दर्शन होते है इसको भी स्पष्ट किया है ।

अंतिम और पाँचवें अध्याय में उपयुक्त चार अध्यायों का निष्कर्ष रुप में विवेचन किया गया है । प्रबंध के अंत में हिंदी सहायक और आधार ग्रंथों की सूचि दी गई हैं ।

प्रस्तुत लघु - शोध प्रबंध के लिए आदरणीय पूज्य गुरुवर्य डॉ.व्यं.वि. द्रविड जैसे विद्वान मार्गदर्शक मिले, यह मेरा परम सौभाग्य है । इस प्रबंध के लिए श्रध्देय डॉ.द्रविड जी का सुयोग्य और प्रेरणात्मक मार्गदर्शन मिला इसलिए मैं उनका अत्याधिक ऋणी हूँ । अनेक व्यस्तताओं के बावजूद और स्वास्थ्य अच्छा न होते हुऐ भी उन्होंने जो अनमोल सहकार्य किया, मेरी अनगिनत गलतियों को सुधार - सँवार कर प्रबंध श्रेष्ठ और उच्चतम बनाया इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ । इस प्रबंध के सफलता का पूरा श्रेय मैं अपने गुरुवर्य को ही देता हूँ ।

इस शोध प्रबंध कार्य के लिए अनेक महानुभवों ने मुझे शुभकामनाएँ और सक्रिय सहयोग दिया है । जिनमें शिवाजी विश्वविद्यालय , हिंदी विभाग के प्रधानाचार्य डॉ.व्ही.के.मोरे तथा उनके सहकारी डॉ.शहा, प्रा.कणबरकर, प्रा.वेदपाठक, प्रा.तिवले , प्रा.श्रीमती भागवत तथा प्रा.हिरेमठ आदि लोगों का मैं अत्याधिक ऋणी हूँ ।

मेरे आदरणीय गुरु श्री.ए.ए.पोतदार और सौ. अनुराधा पोतदार जी ने मुझे समय - समय पर अनमोल सहकार्य दिया इसी कारण मैं अपना यह प्रबंध पूरा कर सका । गुरुवर्य

श्री.पोतदारजी का सहयोग मुझे हमेशा मिला है और विश्वास है कि आगे भी ऐसी ही कृपादृष्टि रहे ।

अनेक विघ्नबाधाओं को और व्यस्तताओं को उठाते हुऐ भी जिन्होंने मुझे शोध साधना के मार्ग में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन जिन आदरणीय व्यक्तियोंने दिया उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । मुझे अनेक मान्यवरोंने और मित्र परिवारवालोंने सहकार्य दिया उनमें विशेष रुप से जोशी परिवार तथा तोष्णीवाल प्रमुख है । मेरे मित्र जोशी बंधु, तोष्णीवाल बंधु, श्री.शिकंदर तहसीलदार, श्री.विवेक चिकोर्डे, विलास माळगी, दीपक पिराले, श्री.दीपक चव्हाण, श्री.सुहास अंगापूरकर, श्री.रघुनाथ काकडे, जगन्ननाथ पाटील तथा मुख्याध्यापक श्री.एस.एच.भोसले और प्राचार्या सौ.ए.ए.पाटील, अध्यापक अमर बुल्ले काशीनाथ भोसले,ए.बी.पवार आदि लोगों का वरदहस्त मेरे सिरपर हमेशा रहा है । इन समस्त मित्र, परिवार का मैं आभारी हूँ ,और अगले जीवन के लिए शुभकामनाएँ चाहता हूँ ।

प्रस्तुत शोध - प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ और सहायक ग्रंथों की प्राप्ति शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से हो गई इन पदाधिकारियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ । साथ ही आर्टस्,कॉमर्स ॲन्ड सायन्स कॉलेज, इचलकरंजी के ग्रंथपाल श्री.बी.बी.आयरे और सहायक ग्रंथपाल श्री.ए.टी.फाटक का मैं सविनय आभारी हूँ ।

इस शोध - प्रबंध का टंकन कार्य करनेवाले श्री.टायपिंग सेंटर, इचलकरंजी के विनायक कडवाले और सुरेंद्र सौंदत्तीकर के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने कम समय में शुध्द टंकन कार्य कर सुंदर सहयोग दिया है ।

प्रस्तुत शोध - प्रबंध में कुछ दोष नहीं है, ऐसा मैं अपनी ओर से मानता हूँ । जहाँ तक संभव है, मैंने इस प्रबंध को निर्दोष बनाने का प्रयास किया है । मेरा यह प्रयास किसी के लिए भी काम आ सके तो मैं अपना परम सौभाग्य समझूँगा ।

मेरा यह प्रयास मेरे माताजी - पिताजी, जिन्होंने खुद अज्ञानके अंधकार में रहकर मुझे ज्ञान का आलोक दिया । मातृ - पितृ ऋण में रहकर ही मैं उनके पवित्र चरणों में यह प्रबंध सविनय अर्पित करता हूँ ।

(शंकर रामचा दळवी)

27 MAY 1993